कडू की खेती, संरक्षण, उत्पादन एवं विपणन संबंधी प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रमों पर रिपोर्ट

A Report on Training and Demonstration Programmes on Cultivation, Conservation, Production and Marketing of Kadu

भा॰वा॰अ॰शि॰प॰-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान , शिमला द्वारा जड़ी-बूटी सेल, जाईका, हिमाचल प्रदेश वन विभाग के वित्तपोषण से संचालित परामर्श परियोजना के अंतर्गत कडू की वैज्ञानिक खेती, संरक्षण, उत्पादन एवं विपणन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से **22 एवं 23 सितंबर को क्रमशः सरघा तथा बागा-सरहान** में प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किए गए । इसके अंतर्गत गठित सरघा एवं बागा-सरहान के दो सामान्य हित समूहों के सदस्यों, वन विभाग के क्षेत्रीय फील्ड स्टाफ एवं जायका स्टाफ सहित लगभग 30-30 प्रतिभागियों ने भाग लिया । प्रतिभागियों को कडू की खेती करने में आ रही व्यावहारिक समस्याओं के समाधान हेतु विशेषज्ञों द्वारा तकनीकी सुझाव एवं आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया गया । प्रतिभागियों ने फील्ड स्तर पर कडू के पौध तैयार करने, रोपण, वृद्धि, रख-रखाव, संरक्षण, कटाई एवं प्रसंस्करण से संबंधित विभिन्न समस्याओं को विशेषज्ञों के साथ साझा किया । डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान, प्रशिक्षण समन्वयक, ने बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा सामान्य हित समूहों एवं स्थानीय हितधारकों को कडू की वैज्ञानिक खेती, संरक्षण, उत्पादन एवं विपणन के लिए निरंतर हैंड-होल्डिंग सपोर्ट एवं कौशल विकास प्रदान किया जा रहा है । इसी क्रम में पिछले वर्ष इन दोनों समूहों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए थे । उसी कड़ी में दूसरे हैंड-होल्डिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य प्रतिभागियों को फील्ड में व्यावहारिक जानकारी उपलब्ध कराने तथा खेती के दौरान सामने आ रही समस्याओं के समाधान के लिए विशेषज्ञ तकनीकी सलाह प्रदान करना था ।

डॉ. संदीप शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त), ने प्रतिभागियों को कडू की वैज्ञानिक खेती, पौध तैयार करने एवं संरक्षण की तकनीकों के बारे में विस्तृत जानकारी दी । उन्होंने कडू के संरक्षण एवं सतत उपयोग से संबंधित प्रमुख चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सफल खेती के लिए उपयुक्त स्थल एवं खेत का चयन अत्यंत महत्वपूर्ण है । उन्होंने बताया कि कडू की खेती के लिए मिट्टी एवं स्थल की उपयुक्तता, जल निकास तथा नमी की स्थिति पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए । खेत में पानी का ठहराव नहीं होना चाहिए, क्योंकि अत्यधिक नमी के कारण जड़ों में सड़न की समस्या उत्पन्न हो सकती है । उन्होंने सर्दियों में पाले से पौधों की सुरक्षा के लिए आसपास उपलब्ध घास-पत्तियों से मल्चिंग करने की सलाह भी दी । डॉ. चौहान ने प्रतिभागियों को कडू की फसल के सामान्य रख-रखाव, उचित समय पर कटाई तथा प्राथमिक प्रसंस्करण से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की । डॉ. रणजीत कुमार ने क्षेत्र में उगाई जाने वाली उपयुक्त औषधीय प्रजातियों, जैसे चौरा, वन ककड़ी, निहानी एवं कुठ आदि की पहचान, उपयोगिता एवं औषधीय महत्व के बारे में जानकारी साझा की इसके अतिरिक्त उन्होने कम्युनिटी की भागीदारी से औषधीय पौधों के संरक्षण पर चर्चा की । श्री खुशदिल, सलाहकार, जड़ी-बूटी सेल, जाईका ने कहा कि कडू की खेती को प्रोत्साहित करने तथा स्थानीय समुदायों को इससे जोड़कर उनकी आय एवं आजीविका के अवसरों को बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं । उन्होंने समूहों को उपलब्ध तकनीकी सहयोग एवं मार्गदर्शन का प्रभावी उपयोग करने का आह्वान किया ।

कार्यक्रम के दौरान सामान्य हित समूहों के सदस्यों को फील्ड में कड़ू की खेती से संबंधित व्यावहारिक प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन भी दिया गया । प्रतिभागियों द्वारा खेती के दौरान सामने आ रही विभिन्न कठिनाइयों एवं समस्याओं को साझा किया गया, जिनका विशेषज्ञों द्वारा मौके पर समाधान सुझाया गया तथा आवश्यक तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सामान्य हित समूहों एवं वन विभाग के फील्ड स्टाफ की तकनीकी क्षमता को बढ़ाना तथा कड़ू सहित औषधीय पौधों की वैज्ञानिक खेती, संरक्षण, सतत उपयोग एवं बेहतर विपणन को प्रोत्साहित करना रहा । इस प्रकार के प्रशिक्षण एवं निरंतर हैंड-होल्डिंग कार्यक्रम न केवल स्थानीय स्तर पर महत्वपूर्ण औषधीय पौधों के संरक्षण एवं वैज्ञानिक उत्पादन में सहायक हैं, बल्कि ग्रामीण समुदायों के लिए आजीविका एवं आय के नए अवसर सृजित करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं ।

Under the consultancy project being implemented by the ICFRE-Himalayan Forest Research Institute Shimla, with financial support from the Jadi-Buti Cell, JICA, Himachal Pradesh Forest Department, training and demonstration programmes were organized at Sargha and Baga-Sarahan on 22nd and 23rd September, 2026 respectively, with the objective of promoting the scientific cultivation, conservation, production and marketing of Kadu. About 30 participants each, including members of the two Common Interest Groups (CIGs) formed at Sargha and Baga-Sarahan, field staff of the Forest Department and JICA staff, participated in the programmes. During the programmes, technical suggestions and necessary guidance were provided by experts to address the practical problems being faced by the participants in Kadu cultivation. The participants shared various field-level issues related to nursery raising, planting, growth, maintenance, conservation, harvesting and processing of Kadu with the experts. Dr. Joginder Singh Chauhan, PI and Training Coordinator, informed that the HFRI is providing continuous hand-holding support and skill development to the selected Common Interest Groups and local stakeholders for scientific cultivation, conservation, production and marketing of Kadu. In this context, training programmes had been organized for both groups last year. As a continuation of these efforts, the second hand-holding programme was organized with the objective of providing practical field-level knowledge to the participants and expert technical advice for resolving the problems encountered during cultivation.

Dr. Sandeep Sharma, Senior Scientist (Retired), provided detailed information to the participants on scientific cultivation, nursery raising and conservation techniques of Kadu. Highlighting the major challenges associated with the conservation and sustainable utilization of Kadu, he emphasized that selection of a suitable site and field is extremely important for successful cultivation. He explained that special attention should be given to soil and site suitability, drainage and moisture conditions. Water stagnation must be avoided in the field, as excessive moisture may lead to root rot. He also advised the participants to use locally available grass and leaf litter as mulch to protect the plants from frost during winter. Dr. Chauhan provided important information on general crop maintenance, timely harvesting and processing of Kadu. Dr. Ranjit Kumar, Scientist shared information on the identification, utility and medicinal importance of suitable medicinal plant species grown in the

region, such as Chaura, Van Kakri, Nihani and Kuth. He also discussed the importance of community participation in the conservation of medicinal plants. Mr. Khushdil, Consultant, Jadi-Buti Cell, JICA, stated that continuous efforts are being made to promote Kadu cultivation and to engage local communities in this activity so as to enhance their income and livelihood opportunities. He urged the groups to make effective use of the technical support and guidance available to them.

During the programmes, practical training and field demonstrations on Kadu cultivation were provided to the members of the Common Interest Groups. The participants shared various difficulties and problems encountered during cultivation and the experts suggested solutions to these issues on the spot and provided the necessary technical guidance. The main objective of the programmes was to enhance the technical capacity of the Common Interest Groups and field staff of the Forest Department and to promote scientific cultivation, conservation, sustainable utilization and better marketing of Kadu and other medicinal plants. Such training and continuous hand-holding programmes not only contribute to the conservation and scientific production of important medicinal plants at the local level, but can also play a significant role in creating new livelihood and income-generating opportunities for rural communities.

कार्यक्रम के छायाचित्र

सरघा/Sargha

बागा-सरहन /Baga-Sarhan)

Media Coverage/ मीडिया

कड़ू की खेती में आ रही दिक्कतों के समाधान के विशेषज्ञों ने दिए सुझाव

सरघा व बागा-सरहान में किसानों को वैज्ञानिक खेती की जानकारी

निरमंड (कुल्लू)। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने सरघा और बागा सरहान में कार्यक्रमों का आयोजन किया। इसमें सामान्य हित समूहों के सदस्य, वन विभाग के फील्ड स्टाफ और जायका के कर्मचारियों समेत महिलाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में कड़ू की खेती के दौरान किसानों और समूहों को पेश आ रही व्यावहारिक समस्याओं पर विशेषज्ञों ने तकनीकी सुझाव दिए।

प्रतिभागियों ने कड़ू की पौध तैयार करने, रोपण, वृद्धि, रख-रखाव, संरक्षण, कटाई और प्राथमिक प्रसंस्करण से जुड़ी समस्याएं विशेषज्ञों के समक्ष रखीं। इस मौके पर इन समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक तकनीकी मार्गदर्शन भी दिया गया।

प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान ने बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की ओर से सामान्य हित

बागा-सरहान में लोगों को जानकारी देते विशेषज्ञ। स्रोत : जागरूक पाठक

समूहों और स्थानीय हितधारकों को कड़ू की वैज्ञानिक खेती, संरक्षण, उत्पादन एवं विपणन के लिए लगातार हैंड-होल्डिंग सपोर्ट और कौशल विकास प्रदान किया जा रहा है। पिछले वर्ष भी दोनों समूहों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए थे। संवाद

तूफान मेल न्यूज's post

तूफान मेल न्यूज

4 days ago ·

कड़ू की खेती में आ रही समस्याओं के समाधान हेतु विशेषज्ञों ने दिए सुझाव

कुल्लू।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान , शिमला द्वारा जड़ी-बूटी सेल, जाईका, हिमाचल प्रदेश वन विभाग के वित्तपोषण से संचालित परामर्श परियोजना के अंतर्गत कड़ू की वैज्ञानिक खेती, संरक्षण, उत्पादन एवं विपणन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 22 एवं 23 सितंबर को क्रमशः सरघा तथा बागा-सरहान में प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किए गए । इसके अंतर्गत गठित सरघा एवं बागा-सरहान के दो सामान्य हित समूहों के सदस्यों, वन विभाग के क्षेत्रीय फील्ड स्टाफ एवं जायका स्टाफ सहित लगभग 30-30 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रतिभागियों को कड़ू की खेती करने में आ रही व्यावहारिक समस्याओं के समाधान हेतु विशेषज्ञों द्वारा तकनीकी सुझाव एवं आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया गया । प्रतिभागियों ने फील्ड स्तर पर कड़ू के पौध तैयार करने, रोपण, वृद्धि, रख-रखाव, संरक्षण, कटाई एवं प्रसंस्करण से संबंधित विभिन्न समस्याओं को विशेषज्ञों के साथ साझा किया।

डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान, प्रशिक्षण समन्वयक, ने बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा सामान्य हित समूहों एवं स्थानीय हितधारकों को कड़ू की वैज्ञानिक खेती, संरक्षण, उत्पादन एवं विपणन के लिए निरंतर हैंड-होल्डिंग सपोर्ट एवं कौशल विकास प्रदान किया जा रहा है। इसी क्रम में पिछले वर्ष इन दोनों समूहों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए थे । उसी कड़ी में दूसरे हैंड-होल्डिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य प्रतिभागियों को फील्ड में व्यावहारिक जानकारी उपलब्ध कराने तथा खेती के दौरान सामने आ रही समस्याओं के समाधान के लिए विशेषज्ञ तकनीकी सलाह प्रदान करना था । डॉ. संदीप शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त), ने प्रतिभागियों को कड़ू की वैज्ञानिक खेती, पौध तैयार करने एवं संरक्षण की तकनीकों के बारे में विस्तृत जानकारी दी । उन्होंने कड़ू के संरक्षण एवं सतत उपयोग से संबंधित प्रमुख चुनौतियों पर